ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE
SIS

SHODH SARITA

SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 27, July-September, 2020
Page Nos. 25-29

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

CHALLENGES AND OPPORTUNITIES: "A NEW NORMAL EDUCATION SYSTEM"

Dr Abhilasha Bajaj*

ABSTRACT

On line learning is a new way of learning where education can be imparted through electronic media with the help of internet. With the advancement of Information and Communication Technology correspondence learning or distance education or in any other situations where formal learning in actual classrooms are not possible online learning comes to use. Online learning widens the spectrum of traditional classroom teaching learning process. This paper discuss the concept of e learning in the time of pandemic COVID - 19.The pandemic enforced the lockdown across the world creating panic on people life. Education system is badly affected by this. In this paper both the challenges and opportunities of Covid-19 on education system along with the concept of e learning are discussed. Measures taken by Government of India to provide seamless education and some suggestions are also shared to facilitate educational activities in this situation.

Keywords : E -learning, Internet education , Opportunities and challenges of online learning .

INTRODUCTION :

In 1960 the University of Illinois developed a classroom with linked computer terminals where the students could listen to recorded lectures of a particular course. This was the first time that e-learning in a form was started. Some professors of Stanford University also used computers for teaching mathematics and reading in elementary schools. From the start of computer based learning, many e learning courses started. In 1990 with the growth of internet many reputed schools starts taking keen interest in virtual education. By 1994 the first online high school CAL [computer aided learning] campus came into existence. In a study by UNESC0 (2008), there were 18 million students who were enrolled in some kind of online programme worldwide which was a 1.6 % increase from 2002. In our country, there is a big scope for online education in current time and the pandemic has only aide the situation more favourable for online education. Uncertainties of the time in which we live in and the challenges of the corona virus disease are bound to bring about changes in world around. In our country also educational institutions are trying really hard to dea with this sudden change from institutionalised learning o classroom learning to online education system.

Objectives of the study :

The research paper has the following objectives:

1. To discuss the impact of pandemic covid-19 o education.
2. To highlight various opportunities that onlir education has given during this time of pandemic.
3. To highlight the challenges of online education.
4. To enlist various measure taken by government India for education sector during this pandem covid-19.

Methodology :

For collecting the data of this research a Goog form was created having questions based opportunities and challenges of on line educati

*Assistant Professor - Department of Education, Aditi Mahavidyalaya Delhi University, Delhi.

I.Q.A.C. Cordinator
Aditi Mahavidyala
Bawana, Delhi-1100

NAAC Cordinator
Aditi Mahavidyala
Bawana, Delhi-110039

Principal,

बलोग –94 संवेद फाउण्डेशन का मासिक प्रकाशन
6, अंक 8, अगस्त 2018
N 2277-5897 SABLOG

सम्पादक
किशन कालजयी

सहायक सम्पादक
प्रकाश देवकुलिश
राजन अग्रवाल
प्रदीप कुमार सिंह

ब्यूरो
प्रदेश : तमन्ना फरीदी
र : कुमार कृष्णन
ण्ड : महादेव टोप्पो

दकीय सलाहकार
आनन्द कुमार
ीन्द्र नाथ ठाकुर
आनन्द प्रधान
ंजु रानी सिंह
विजय कुमार
मीरा मिश्र
ष कुमार शुक्ल
लाक 'आहन'

न्य निदेशक
य कुमार झा

र्कीय सम्पर्क
तल, सेक्टर-16, रोहिणी,
ी-110089
340436365
thly@gmail.com
onthly.blogspot.in

ता शुल्क
– वार्षिक : 300 रुपये
– आजीवन : 5000 रुपये
बलोग
9480200000045
फ बड़ौदा
ली, दिल्ली
B0TRDBAD
। मुद्रक किशन कालजयी द्वारा दिल्ली-110089 से प्रकाशित और ाहदरा दिल्ली-110032 से मुद्रित।
विचार लेखकों के हैं, उनसे सम्पादकीय
वेवाद के लिए न्यायक्षेत्र दिल्ली।

इस बार

मुनादी / यह अराजक एकध्रुवीयता 4

राजनीतिक एकध्रुवीयता और विपक्ष

भारतीय लोकतन्त्र और राजसत्ता का काँग्रेस-मुक्त दौर : **आनन्द कुमार** 5
भारतीय राजनीति में विलीन होते ध्रुव : **वीरेन्द्र जैन** 7
भूमण्डलीकरण की तार्किक परिणति : **घनश्याम** 9
वर्चस्व की राजनीति का उदय : **अनिल चमड़िया** 11
भगवा वर्चस्व के सामने विपक्ष की बेचारगी : **जावेद अनीस** 13
ध्रुवीकरण की राजनीति का चरम : **शिवदयाल** 15
खतरे में लोकतन्त्र : **अजय वर्मा** 17
गहन है यह अँधेरा : **ब्रजभूषण शुक्ल** 19

राज्य

उत्तर प्रदेश / ताजमहल और विघटनकारी राजनीति के खेल : **राम पुनियानी** 21
छत्तीसगढ़ / मत कहिये नक्सलियों को गन वाले गांधी! : **सुभद्रा राठौर** 23

स्तम्भ

चतुर्दिक / एक नये, शुद्ध विपक्ष की आवश्यकता : **रविभूषण** 25
देशकाल / आत्मकथाओं और संस्मरणों के बहाने : **राहुल सिंह** 28
खुला दरवाजा / जाति पूछो भगवान की : **ध्रुव गुप्त** 30
तीसरी घंटी / एकल का वृहद संसार : **राजेश कुमार** 32
साँच कहो तो मारन धावै / गाँधी विरासत की विडम्बना : **शंकर शरण** 35
क्रान्तिनामा / उल्लासकर दत्त : एक अनोखे क्रान्तिकारी : **सुधीर विद्यार्थी** 37
आँखन देखी / अयाची के गाँव से : **मणीन्द्र नाथ ठाकुर** 39
मुद्दा / आदिवासियों को समझाने की कवायद : **प्रमोद मीणा** 42
स्त्रीकाल / स्त्री अध्ययन पर सुनियोजित हमला : **संजीव चन्दन** 45
सामयिक / जनप्रतिनिधियों के खिलाफ दर्ज मामलों का क्या हुआ? : **शैलेन्द्र चौहान**
साहित्य / अनुवाद की परम्परा और प्रेमचन्द : **निशा** 51
आत्मकथ्य / स्त्री-मन की अनकही कथा : **कुसुम अंसल** 53
एक पुरातत्त्ववेत्ता की डायरी / फोटुआ हमें भी दिखाओ : **शरद कोकास** 5
शिक्षा /साहित्य में शिक्षा और असमानता : **अभिलाषा बजाज** 57
शख्सियत / 'ना धिं धिं ना' के बादशाह : **जागृति** 59
सिनेमा / सेल्युलॉयड पर नक्सल : **शेखर मल्लिक** 61
शहर शहर से / प्रस्तुति : **ब्रजमोहन** 64
पुस्तक-समीक्षा / झारखण्ड की पत्रकारिता के संघर्ष : **महादेव टोप्पो** 66

आवरण : क्वालिटी प्रिन्टर्स, दिल्ली

अगला अंक : अभिवंचितों की आवाज

Principal,
Aditi Mahavidyalaya
(University of Delhi)
Bawana, Delhi-110039.

I.Q.A.C.
Cordinator
Aditi Mahavidyala
Bawana, Delhi-110

I.Q.A.C.
Cordinator
Aditi Mahavidyala
Bawana, Delhi-110039

NAAC
Cordinator
Aditi Mahavidyala
Bawana, Delhi-110039

शिक्षा

साहित्य में शिक्षा और असमानता

अभिलाषा बजाज

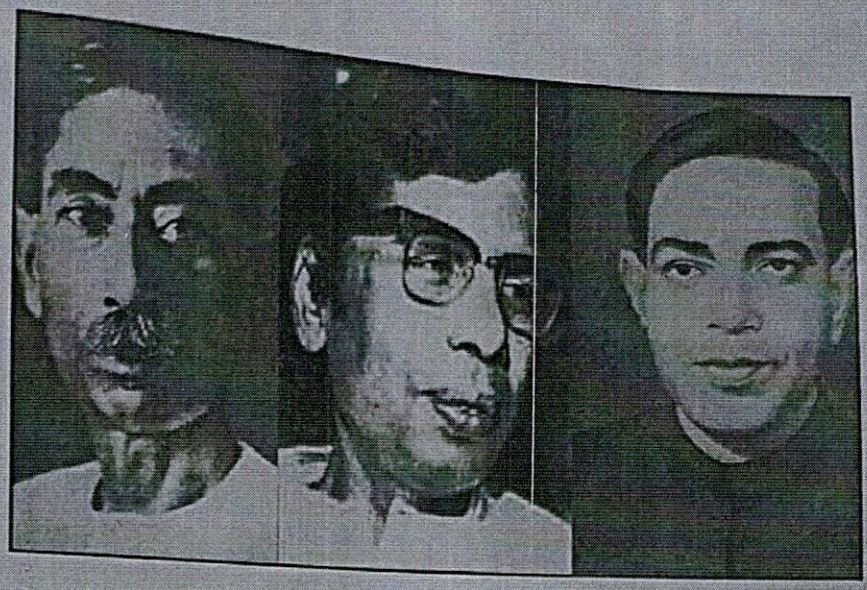

त्य के अनुशीलन से यह ष्ट होता है कि अनेक रों पर साहित्यकार समाज ष्ट मार्ग की ओर मोड़ता श्चिम के रुसो वाल्टेयर जैसे साहित्यकारों ने कारी साहित्य की सर्जना और समाज को क्रान्ति रणा दी। कार्ल मार्क्स चारों ने रुस और चीन माज को बदलकर रख मैथिलीशरण गुप्त ने -भारती से ऐसी ही दी। भगवद्गीता के सिद्धान्त और तर्क पुष्ट , समाज के अतिशय प्रेरक रहे हैं।

अदिति महाविद्यालय, दिल्ली के
विभाग में असिस्टेन्ट प्रोफेसर हैं।
+919873977478
abhilasha_du2012@yahoo.in

साहित्य का उद्भव शून्य में या आकाश में नहीं होता। प्राय: साहित्यिक प्रवृत्तियों के मूल में कुछ ऐसे ऐतिहासिक सत्य रहते हैं जो सामाजिक, वैयक्तिक और संस्कारगत स्थितियों के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। वास्तव में आज साहित्य व्यक्तिगत अनुभूतियों की अभिव्यक्ति मात्र न होकर चारों और फैले हुए विभिन्न सन्दर्भों से जुड़ा हुआ है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस सम्बन्ध में अपना अभिमत व्यक्त करते हुए कहा है कि ''साहित्य जन की चित्तवृत्तियों का परिणाम होता है। सच्चा साहित्यकार समाज के विगत पर दृष्टि रखता है और आगत की सूझ रखता है। उसी आलोक में वह समाज के मूल्यों की सही परख करता है।''

साहित्य के अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि अनेक अवसरों पर साहित्यकार समाज को इष्ट मार्ग की ओर मोड़ता है। पश्चिम के रुसो वाल्टेयर जैसे साहित्यकारों ने क्रान्तिकारी साहित्य की सर्जना की और समाज को क्रान्ति की प्रेरणा दी। कार्ल मार्क्स के विचारों ने रुस और चीन के समाज को बदलकर रख दिया। मैथिलीशरण गुप्त ने भारत-भारती से ऐसी ही प्रेरणा दी। भगवद्गीता के ज्ञान-सिद्धांत और तर्क पुष्ट संकेत, समाज के अतिशय प्रेरक रहे हैं। साहित्य के द्वारा किसी न किसी प्रकार की शिक्षा तथा दिशा दृष्टि देने की बात को लक्ष्य करके आधुनिक काल में मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी मान्यता को स्पष्ट करते हुए कहा था- ''*केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए, उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।*''

प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में जाति, धर्म, प्रदेश आदि की सीमाओं को तोड़कर नारी समस्याओं की भी चर्चा की। सेवासदन में वेश्यावृत्ति के विरोध को मुखर स्वर देते हुए उन्होंने इब्सन तथा बर्नार्ड शा के समान नारी की कटु आलोचना न कर उसके प्रति दया तथा ममतामय दृष्टिकोण अपनाया। प्रेमचन्द ने अपनी कृतियों में धार्मिक सदभावना की बात किसी न किसी रुप में की है जिसका आदर्श रुप 'गोदान' में गोबर तथा मुसलमानों के बीच दोस्ती के रु[illegible] में देखा जा सकता है। जहाँ 'गोदान' में होरी की बेटी बूढ़े से ब्याह दिए जाने पर भी सन्तो[illegible] का अनुभव करती है वहीं दूसरी ओर 'बड़े घ[illegible] की बेटी' की आनन्दी बिखरते हुए परिवा[illegible] टूटने से बचाने के लिए अपने अहं को छोड़[illegible] 'आग लगे मेरी जीभ को' कहते हुए अपने शिक्षि[illegible]